# ममता कालिया

ममता कालिया का जन्म 2 नवंबर 1940 ई. को हुआ । इनका जन्म स्थान उत्तर प्रदेश में मथुरा के वृन्दावन है । ममता कालिया के पिता कुछ वर्षों तक अध्यापक भी रहे बाद में उन्होंने आकाशवाणी में भी कार्य किया । वे अंग्रेजी और हिंदी साहित्य के विद्वान भी थे , वे अपनी बेबाक बयानबाजी के लिए भी जाने जाते थे । इन्हीं के व्यक्तित्व छाप ममता कालिया पर भी दिखाई देती है । अपनी रचनाओं में वह न केवल महिलाओं से जुड़े सवाल उठाती है बल्कि उन्होंने उसका उत्तर देने की भी कोशिश अपनी रचनाओं में करती दिखाई पड़ती है । ममता कालिया ने अपने लेखन में रोजमर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा और अपनी रचनाओं में इसे रेखांकित भी किया है साथ ही साथ उनका मानना है कि स्त्री और पुरूष का संघर्ष अलग नहीं , न ही कमतर है वरन समाजशास्त्रीय अर्थो में ज्यादा विकट और महत्त्वपूर्ण है । हिंदी कहानी में उनकी उपस्थिति सातवें दशक से निरंतर बनी हुई है ।

विश्वनाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता वाली एक चयन समिति ने ममता कालिया को उनके उपन्यास ' दुक्खम-सुक्खम ' के लिए 27वें ब्यास सम्मान से नवाजने का फ़ैसला किया । उनका यह उपन्यास 2009 में प्रकाशित हुआ था । उन्हें उत्तर-प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा यशपाल कथा सम्मान , साहित्य भूषण सम्मान एवं राम मनोहर लोहिया सम्मान से सम्मानित किया गया है । इसके अलावा उन्हें वनमाली सम्मान एवं वाग्देवी सम्मान से भी नवाजा गया है ।

इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है -

***कहानी संग्रह*** - छुटकारा , निर्मोही , पच्चीस साल की लड़की , प्रतिदिन सीट न.6 , एक अदद औरत , उसका यौवन , जाँच अभी जारी है तथा थिएटर रोड के कौए आदि प्रमुख है ।

***उपन्यास :*** दौड़ , लड़कियाँ , एक पत्नी के नोट्स , प्रेम कहानी , बेघर , नरक दर नरक , अंधेरे का ताला ।

***कविता संग्रह :*** कितने प्रश्न करूँ , खाँटी घरेलू औरत ।

***नाटक संग्रह :*** आप न बदलेंगे , यहाँ रहना मना है

***संस्मरण :*** कितने शहरों में कितनी बार ।

ममता कालिया हिंदी और अंग्रेजी , दोनों भाषाओं में लिखती है । उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए की डिग्री हासिल की । 1973 में इलाहाबाद के एक डिग्री कॉलेज में प्राचार्य नियुक्त हुई और वहीं से 2001 में अवकाश ग्रहण किया ।